पिछले जन्म में

(Sample)

राजन-इक़बाल Reborn Series # 5

लेखक

शुभानन्द

..... "भाईजान?"

"हूँ?"

"आप ने कभी खुद को बोलते हुए सुना है?"

"म...मतलब?"

"मतलब ये कि कम से कम पच्चीस साल के मालूम पड़ते हो. अमा यार! हम बच्चे हैं."

"मगर..."

"अब ये बकवास छोड़ो और मेरी एक फडकती हुई शायरी सुनो. " डिब्बा बंद करते हुए अहसान मूड में बोला- "सारा खाना हजम हो जायेगा. साथ में दिमाग से ऐसे बुरे-बुरे ख्याल भी जाते रहेंगे."

"नहीं!" राजीव चीखा. पर अहसान कहाँ रुकने वाला था. वो शुरू हो गया-

"चाँद को गुरूर है, कि उसके पास नूर है

गौर फरमाइएगा-

चाँद को गुरूर है, कि उसके पास नूर है

इतना भी क्यों मगरूर है, हमें भी तो गुरूर है

नूर नहीं तो क्या हुआ, हमारा दोस्त लंगूर है."

कहते हुए अहसान उठा और एक तरफ भाग लिया.

"रुक साले!" राजीव ने खींचकर डिब्बा उस पर दे मारा, पर वो साफ़ बच गया और जीभ दिखाते हुए बोला-

"कितने खट्टे हैं लंगूर....मेरा मतलब अंगूर."

इस तरह दोनों दोस्त साथ-साथ बड़े होते चले गए. दोनों के मिजाज और शौक अलग-अलग थे, फिर भी दोनों एक दूसरे पर जान छिडकते थे. किसी को ये बात समझ नहीं आती थी कि दोनों लड़के एकदम विपरीत व्यक्तित्व के होते हुए भी हमेशा साथ कैसे रहते हैं.

अहसान चंचल प्रवत्ति का था और राजीव गंभीर. अहसान आज में जीता था

और हँसता-हँसाता रहता था बल्कि राजीव भविष्य के बारे में सोचता था, उसे देश के लिए कुछ करना था. वो अहसान को भी प्रेरित करने की कोशिश करता था, पर वो उसकी बात हंसी में उड़ा देता था.

उस वक्त राजीव-अहसान मैट्रिक में थे, जब एक ऐसी घटना हुई जिसने दोनों दोस्तों को अलग कर दिया.....

..... "भाई आज मौसम बड़ा सुहावना है. " अहसान बादलों की तरफ देखते हुए बोला.

"तो?"

"ऐसे मौसम में जवां दिलों में उमंगें उठने लगती हैं. दिमाग में नशा-सा चढ़ने लगता है."

"मुझे तो ऐसा कुछ नहीं लग रहा."

"ज़ाहिर है- मैं जवां लोगों की बात कर रहा था."

"मतलब?" राजीव गुस्से-से घूमा.

"कुछ नहीं! कुछ नहीं! मेरी तो रबड़ की जुबान है, फिसल जाया करती है. आप सामने गौर फरमाइए- साइकिल के टायर भी रबड़ के हैं, कहीं फिसल न जांए."

राजीव चुपचाप साइकिल चलाता रहा.

कुछ आगे जाकर उसने ब्रेक लगा दी.

"क्या हुआ? अभी तो दिल्ली दूर है जनाब."

जब राजीव ने कोई जवाब नहीं दिया तो अहसान नीचे उतरा और उसके चेहरे को देखने लगा.

राजीव की द्रष्टि रोड के किनारे खेतों में स्थिर थी.

"कहाँ खो गए?"

"श...!" राजीव ने उसे चुप रहने का इशारा किया. अहसान बेवकूफों की तरह पलके झपकाकर खेतों में देखने लगा.

वहां झाडियों के बीच दो आदमी बातें करते नज़र आये.

"कौन हैं ये?" अहसान फुसफुसाया.

राजीव कुछ बोला नहीं, बल्कि अचानक ज़मीन पर लेट गया और फिर रेंगते हुए खेत की तरफ बढ़ गया.

अहसान उसकी ये हरकत देखकर बौखला गया. उसे कुछ और नहीं सूझा तो वो भी उसका अनुसरण करते हुए रेंगने लगा.

दोनों रोड के उस पार खेत में पहुंच गए. वहां उन्हें उन दो आदमियों का वार्तालाप सुनाई दिया-

"गिन लीजिए, दरोगा जी!"

"कैसी बात कर रहे हैं, सेठजी! आप लाये हैं, तो उसमे गलती कहाँ हो सकती है."

"मेरा काम हो जायेगा न?"

"आप चिंता न करें. सबकुछ मेरे ऊपर छोड़ दें."

"ठीक है! चलते हैं."

उसके बाद दोनों के चलने की आवाज़ आई. राजीव ने सतर्कता से देखा- दोनों लोग विपरीत दिशा में खेत के अंदर ही चलते चले गए.

"ये क्या हरकत थी?" अहसान अपने मिट्टी लगे कपड़ों को झाड़ते हुए खड़ा हुआ. "सारे कपड़े गंदे हो गए. अम्मी दोनों कान उखाड़ देंगी."

"सुना नहीं- वो लोग कौन थे?" राजीव रहस्यमय स्वर में बोला.

"खेत में मिलने वाले इंसान!" अहसान ने मूर्खों की भांति पलकें झपकाई.

"बेवकूफ!" राजीव ने उसके सिर पर चपत लगाकर कहा- "वो अपने इलाके का दरोगा- रतन सिन्ह और सेठ धनीराम थे."

"हुज़ूर! मुझे अपने इलाके की खूबसूरत नाज़नीनों के नाम तो पता है. दरोगा और सेठों का हिसाब तो शायद आपके पास ही हो."

"तुम्हें दोनों की बातें संदिग्ध नहीं लगीं?"

"नहीं!"

"सेठ ने दरोगा को पैसे दिए हैं."

"उधार रहा होगा."

"उधार वापस करने कोई खेत में आता है? वो चोरी-छिपे यहां मिले हैं. इसी से पता चल रहा है कि सेठ ने दरोगा को कोई गलत काम करवाने के लिए पैसे दिए हैं."

"हूँ!" अहसान गहरी सांस लेकर बोला- "मामला तो गंभीर है. अब घर चलें?" कहते हुए अहसान खेत से निकलकर साइकिल की तरफ बढ़ गया.....

……..“हे-हे! गुस्सा छोड़ो मिंया.” रशीद ने बत्तीसी दिखाई- “मैं तो मसखरी कर रहा था.”

“तुम्हें इसकी सजा मिलेगी, रशीद मिंया.” अहसान ने सिर मटकाते हुए कहा- “तुम्हें मेरी एक और शायरी सुननी होगी.”

“इरशाद हुज़ूर!”

“इरशाद के बच्चे, ये शायरी तेरे ऊपर ही बनाई है. ध्यान से सुन और इसे हमेशा याद रखियो-

तेज़ हवा का झोंका आया |
साथ में तेरी खुशबू लाया ||
तेज़ हवा का झोंका आया |
साथ में तेरी खुशबू लाया ||
तब मुझको ये समझ में आया |
मेरे दोस्त तू आज फिर नहीं नहाया ||
तू आज फिर नहीं नहाया ||”

“बहुत खूब-बहुत खूब.”

“चल अब फुट ले.”

तभी अहसान को पीछे-से ज़ोरदार हंसी की आवाज़ आई. वह उस तरफ पलटा.

“हा हा हा.” एक लड़की पेट पकड़ कर, मुंह छिपाते हुए खिलखिलाकर हंस रही थी. अहसान उसको देखता ही रह गया.

दूध-से रंग और तीखे नैन-नक्श वाली वह लड़की बला-की खूबसूरत थी. उसने हरे रंग की चिकन वाली सलवार-कमीज़ पहन रखी थी. हाथों में हरे रंग की ही चूडियाँ थीं, जो आपस में लड़-लड़कर खनक रहीं थीं. ये सारी आवाजें मधुर संगीत बनकर अहसान के कानों में रस घोलने लगी थीं.

अहसान को खुद की तरफ इस तरह देखते हुए वह लड़की सकपका गई. फिर उसने अपने हाथ में पकड़ी किताबों को संभाला और तेजी-से एक तरफ बढ़ गई.

अहसान कुछ देर तक खोया-खोया सा खड़ा रहा, फिर उसके पीछे चल दिया.

वह लड़की पानी पीने के लिए कॉलेज की बिल्डिंग में लगे नलों के पास पहुंची.

उसने पानी के छींटे मुंह पर मारे, फिर पानी पीने लगी.

खांसी की आवाज़ सुनकर वह पलटी. अहसान उसके पीछे खड़ा था.

अहसान को लगा वह फिर भाग जायेगी इसलिए जल्दी-से बोला- “क्या नाम

है आपका?”

“क्यों बताएं?” उसने आँखे तरेरकर उसे देखा और रुमाल से मुंह पोछने लगी....……

……..“म मैं...मजाक कर रहा था.”

सलीमा झुन्झुलाते हुए उठ खड़ी हुई. “सच-सच बोलो नहीं तो चिल्ला-चिल्लाकर सबको जगा दूंगी.”

“पागल हो गई हो क्या?”

“हां! हो गए हैं. सिर्फ आपकी वजह से हम कॉलेज नहीं आ रहे. तीन दिन से हमें सही से नींद नहीं आ रही और आपको मजाक सूझ रहा है.”

“अरे! मगर-”

“मगर-वगर कुछ नहीं! सच-सच बोलिए नहीं तो हम आपका सिर तोड़ देंगे.” कहकर सलीमा ने तकिया उठा लिया.

“बो...बोलता हूँ.” अहसान बुरी तरह से घबरा गया “मुझे आप अच्छी लगती हैं.”

“हम बहुतों को अच्छी लगती हैं. सही बात बोलिए.”

“सही...सही बात तो ये है- सलीमा कि जब से तुम्हें देखा है दिल में सिर्फ और सिर्फ तुम्हारे ही ख्याल घूमते रहते हैं. मुझे तुमसे मोहब्बत हो गई है.”

सलीमा ने तकिया एक तरफ फेंक दिया, फिर मुंह छिपाकर बैड के एक कोने में बैठ गई.

‘रोने तो नहीं लगी.’ अहसान ने सहमते हुए सोचा. “स...सलीमा!”

वह कुछ नहीं बोली....……..

……..राजीव ने हैडफोन हटाये और अपने साथी कैप्टन मनोज से बोला-

“क्या ख्याल है?”

“कुछ तो भारी गडबड है.” मनोज भी हैडफोन हटाकर बोला.

“लाहौर से क्या कोई आता है- सिल्क का कपड़ा खरीदने राजस्थान में?”

“मुझे तो नहीं लगता, राजीव. और राजस्थान में कौन-सा सिल्क मिलता है?

वैसे भी पिछले युद्ध के बाद से पाकिस्तान के साथ इस तरह के व्यापार आदि लगभग बंद ही हैं."

"मै मजाक कर रहा था." राजीव मुस्कराया.

"म...मजाक?"

"तुम्हें क्या लगता है- वो लोग वाकई कोई व्यापारी थे?"

"शक तो मुझे भी है, पर यकीन से क्या कह सकता हूँ?"

"हमारे काम में शक के सहारे ही आगे बढ़ा जाता है." राजीव टहलते हुए खिड़की पर पहुंचा. उसके शरीर पर आर्मी की वर्दी खूब फब रही थी. छाती पर तीन सितारे भी चमक रहे थे. वह बाहर देखते हुए बोला-

"ये वार्तालाप कपड़ों के व्यापारियों के बीच नहीं था. बल्कि पाकिस्तानी जासूसों या आर्मी वालों के बीच था. उनका एक साथी राजस्थान में मौजूद है. लोकेशन शायद राहतगढ़ है. और इनकी बातों से लगता है- ये लोग भारत पर राजस्थान बॉर्डर की तरफ से हमला करने की तैयारी कर रहे हैं क्योंकि सभी भारतीयों का ध्यान पहाडों के बाजार यानि कश्मीर की तरफ होगा, ये लोग आसानी से राजस्थान की तरफ से घुस बैठेंगे."

मनोज के चेहरे पर हैरानी के भाव थे. "ओह! अब समझ में आया. ये लोग कोड्स में बाते कर रहे थे."

"ज़ाहिर है!".....

....."ऊँट की औलाद! कहीं तो रुकेगा." बडबडाते हुए अहसान ने भी पीछा नहीं छोड़ा.

दस मिनट दौड़ने के बाद उसे फिर से ऊँट दिखाई दिया. सामने एक खँडहर दिखाई दे रहा था. ऊँट बाहर ही खड़ा था.

अहसान हाँफते हुए ऊँट के पास पहुंचा. उसने अपना चाकू निकाल लिया था. ऊँट के आस-पास उसका सवार दिखाई नहीं दिया.

"क्यों रे ऊँट भाई?" उसने उसे थपथपाया. "तेरा मालिक कहाँ गया?"

ऊँट जुगाली कर रहा था. अहसान ने चारों तरफ देखा, फिर खँडहर पर नज़र डाली.

रात की चांदनी में वह बेहद भयानक लग रहा था. दूर-दूर तक किसी भी प्राणी के होने के आसार नज़र नहीं आ रहे थे. पर अहसान को यकीन था कि ऊँट सवार अवश्य ही इस खँडहर में जा छिपा है.

अहसान के दिल में किसी भी तरह का भय नहीं था. उसे यकीन था वह चाकू

और अपनी ताकत के बल पर उसे अवश्य पकड़ लेगा.

खंडहर के विशाल दरवाजे पर झाडिया थीं. अहसान उनमे से होते हुए सतर्कता से अंदर आ गया. खँडहर में कोई छत नहीं था, सिर्फ चार दीवारे थीं और उनमे बड़े-बड़े द्वार थे. उसने पूरे खँडहर में शिनाख्त करी पर उसे वहाँ कुछ भी नहीं मिला. फिर वह खँडहर के पीछे गया और पूरा चक्कर लगाकर वापस ऊँट के पास आ पहुंचा.

तभी अचानक रेत फाड़कर एक मानव उठ खड़ा हुआ.....

.....राजीव ने उसका गिरेबान पकड़कर खड़ा किया. मनोज ने उस पर रिवाल्वर तान रखा था.

"उस दिन तो बच निकले थे, पर आख़िरकार हाथ आ ही गए." राजीव बोला- "अब तुम अपने लब्जो में पाकिस्तानी आर्मी का पूरा प्लान हमें बताओगे."

"आप दोनों भारतीय सेना में हो?" अकबर ने पूछा.

"सवाल सिर्फ हम करेंगे."

"बिलकुल करना, पर मैं आप लोगों को एक नायाब नज़ारा दिखाने वाला हूँ. इस जंगल में जगह-जगह बारूद बिछा हुआ है. कोई भी अंदर प्रवेश करेगा तो मारा जायेगा. और अगर किसी तरह बच गया तो उसे मैं भून डालूँगा."

राजीव ने उसे पैनी नज़रों से देखा. "और ये सब इन्डियन आर्मी को नेस्तनाबूत करने के लिए है?"

अकबर ने उसे मुस्कराकर देखा.

अचानक ही दूर कहीं गडगडाहट की आवाज़ आने लगी. मनोज और राजीव ने चौंककर उस दिशा में देखा. अकबर ने तुरंत इस मौके का फायदा उठाया और मनोज आर राजीव पर कूद पड़ा.

.....शालिनी तेज़ धूप और अपने नए कपड़ों से परेशान थी. उसे खुजली हो रही थी जिसके कारण उसकी त्वचा लाल पड़ गई थी. वह सन स्क्रीन निकालकर लगाने लगी.

"काफी टफ मालूम पड़ती हो, कैप्टन." राजीव ताना मारते हुए बोला.

"तुम घाघरा-चोली पहनकर देखो, फिर पता चलेगा." उसने तुनककर कहा फिर

हंस दी.

"क्या हुआ?"

"कुछ नहीं!" वह खिलखिला रही थी- "सोच रही थी तुम घाघरा-चोली में कैसे लगोगे."

एक बार फिर सभी मुंह दबाकर हंस दिए.

"क्या बकवास है?" राजीव झुंझलाया- "गाँव के लोग ये सब नहीं लगाते. अगर पाकिस्तानी आर्मी से सामना हुआ और उन्हें तुमसे इसकी गंध आ गई तो उन्हें शक हो जायेगा."

"फिलहाल हम भारत में हैं न. बॉर्डर पार करने के बाद नहीं लगाउंगी." शालिनी ने गुस्से से कहा फिर सुखविंदर के कान में बोली- "एकदम हिटलर है, तुम्हारा लीडर."

सुखविंदर ने मुस्कराकर चुप रहने का इशारा किया.....

....."अब ये आया है मेरी रेंज में." सुखविंदर दांत पीसते हुए बोला और फिर उसने जेब से हथगोला निकाला और पूरी ताकत से फेंक दिया. गोला टैंक से कुछ पहले ही गिरा. ब्लास्ट हुआ पर टैंक को कुछ फर्क नही पड़ा.

टैंक की गन सुखविंदर की तरफ घूमी और फायर हुआ. सुखविंदर एक तरफ कूद गया. गोला उसके पीछे रेत में गिरा और ज़ोरदार धमाके के साथ फट गया. चारों तरफ रेत का गुबार छा गया.

अब वे लोग टैंक की रेंज में थे- ये खतरा समझते ही वीर ने जल्दी से एक हथगोला उस पर फेंक दिया. इस बार टैंक पर धमाके का असर हुआ और वह डगमगा उठा.

सुखविंदर ने अचानक ही टैंक की तरफ दौड़ लगा दी.

"नहीं!" शालिनी चीख उठी. बाकी लोग भी उसका पागलपन देखकर सहम गए.

टैंक की नाल सुखविंदर की तरफ घूमी.....

.....सलीमा दौडकर अहसान के पास पहुंची और उससे लिपट गई.

"हमें यकीन था...अहसान साहेब कि आप ज़रूर आयेंगे." सुबकते हुए उसने कहा.

अहसान कुछ बोल नहीं सका. उसने उसके सिर पर हाथ फेरा. कितने दिनों से वह सलीमा की फ़िक्र में हर पल तडपता रहा था. आखिरकार वो उसकी बाहों में थी.

"तुम्हारे बिना हर पल मरता रहा हूँ मैं."

"अब हम आपको कहीं नहीं जाने देंगे. अपने पल्लू से बांधकर रखेंगे."

अहसान हंस दिया.

"अहसान!" अचानक अम्मी चीखी- "सलीमा!"

दोनों ने चौंककर उनकी तरफ देखा. वो उनके पीछे इशारा कर रही थीं. उनकी आँखों में खौफ था.

अहसान और सलीमा ने पलटकर देखा- अकबर फर्श पर लेटा हंस रहा था. उसके हाथ में रिवाल्वर था जिसे उसने उन पर तान रखा था.

दोस्तों, बस कुछ ही दिनों में राजन-इक़बाल का ये महाविशेषांक Flipkart, Infibeam, Indiaplaza, Dial a book पर उपलब्ध होगा

आपकी निष्पक्ष राय और सुझावों के इंतज़ार में-

शुभानन्द
Mail: rajaniqbal999@gmail.com